IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

भारतीय पारंपरिक कला का संरक्षण एवं पुनर्स्थापन : विरासत के संरक्षण की दिशा में एक समग्र अध्ययन

नीतू सिंह चौधरी
सहायक आचार्य (चित्रकला)
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा
nitu06121986@gmail.com

सारांश – भारतीय पारंपरिक कला भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धर्म और सामाजिक संरचना की बहुआयामी अभिव्यक्ति है। भित्तिचित्र, लघुचित्र, लोककला, मूर्तिकला, वास्तुकला, वस्त्रकला और हस्तशिल्प भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रमुख आयाम हैं। आधुनिक युग में औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी हस्तक्षेप और वैश्वीकरण के कारण इन कलाओं के संरक्षण की समस्या गंभीर होती जा रही है। प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतीय पारंपरिक कला के संरक्षण एवं पुनर्स्थापन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सिद्धांत, पारंपरिक एवं आधुनिक तकनीकें, संस्थागत प्रयास, सामाजिक सहभागिता, चुनौतियाँ और संभावित समाधान का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि परंपरा और आधुनिक विज्ञान के समन्वित दृष्टिकोण, नीतिगत समर्थन तथा सामुदायिक सहभागिता से ही भारतीय कला विरासत को सुरक्षित रखा जा सकता है।

प्रस्तावना – भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली है। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर वैदिक, मौर्य, गुप्त, मध्यकालीन और आधुनिक काल तक कला भारतीय जीवन का अभिन्न अंग रही है। भारतीय पारंपरिक कला केवल सजावटी माध्यम नहीं, बल्कि समाज की चेतना, धार्मिक विश्वासों, ऐतिहासिक घटनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों का सजीव दस्तावेज है।

अजंता गुफाएँ के भित्तिचित्र, एलोरा गुफाएँ की शैलकला, एलीफेंटा गुफाएँ की मूर्तिकला, खजुराहो मंदिर समूह की अलंकरण शैली तथा कोणार्क सूर्य मंदिर की स्थापत्य संरचना भारतीय कला की उत्कर्ष परंपरा के प्रमाण हैं।

किन्तु वर्तमान समय में पर्यावरणीय असंतुलन, प्रदूषण, अम्लीय वर्षा, अनियंत्रित पर्यटन, शहरी विस्तार और उपेक्षा के कारण इन धरोहरों का अस्तित्व संकटग्रस्त है। अतः संरक्षण और पुनर्स्थापन की वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

संरक्षण एवं पुनर्स्थापनः अवधारणा और सैद्धांतिक आधार

संरक्षण – संरक्षण वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत किसी कला–कृति या धरोहर को उसके मूल स्वरूप में दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने के उपाय किए जाते हैं। यह मुख्यतः निवारक (च्तमअमदजपअम) दृष्टिकोण पर आधारित होता है।

पुनर्स्थापन – पुनर्स्थापन क्षतिग्रस्त कला–कृति को वैज्ञानिक विधियों से उसके मूल स्वरूप के निकट पुनः स्थापित करने की प्रक्रिया है।

संरक्षण के सिद्धांत –

1. न्यूनतम हस्तक्षेप
2. मूल सामग्री का सम्मान
3. प्रत्यावर्तनशीलता
4. प्रामाणिकता
5. प्रलेखन

भारतीय पारंपरिक कला के प्रमुख रूप एवं उनका संरक्षण –

भित्तिचित्र – अजंता, बाघ, तंजावुर और सीताबेंगरा के भित्तिचित्र प्राकृतिक रंगों, चूना और जैविक बाइंडर से निर्मित हैं। इन चित्रों में बौद्ध जातक कथाएँ, धार्मिक प्रसंग और राजकीय जीवन का चित्रण मिलता है।

संरक्षण समस्याएँः

- नमी और जल रिसाव
- दीवारों में दरारें
- फफूंद और कीट
- मानव स्पर्श एवं पर्यटक दबाव

संरक्षण उपाय :

- नियंत्रित आर्द्रता
- रासायनिक स्थिरीकरण

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

- लेजर सफाई
- डिजिटल प्रलेखन

लघुचित्र – राजस्थानी, मुगल, पहाड़ी और दक्कनी लघुचित्रों में सूक्ष्म रेखांकन, स्वर्ण पत्र और खनिज रंगों का प्रयोग होता है।

संरक्षण चुनौतियाँ :

- कागज का अम्लीकरण
- रंगों का फीका पड़ना
- अनुचित प्रकाश व्यवस्था

समाधान :

- Deacidification
- नियंत्रित प्रकाश
- संग्रहण हेतु आर्काइव बॉक्स

लेककला – मधुबनी, वारली, फड़, पिचवाई, पटचित्र जैसी लोककलाएँ ग्रामीण जीवन की सांस्कृतिक पहचान हैं।

प्रमुख समस्याएँ :

- आर्थिक अस्थिरता
- बाजार आधारित परिवर्तन
- मशीन निर्मित प्रतिकृतियाँ

संरक्षण रणनीति :

- कला उद्यमिता
- जीआई टैग
- डिजिटल मार्केटिंग

मूर्तिकला एवं वास्तुकला – पत्थर और धातु की मूर्तियाँ वायु प्रदूषण, अम्लीय वर्षा और जैविक वृद्धि (ठपवसवहपबंस ळतवूजी) से प्रभावित होती हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

संरक्षण उपाय :

- रासायनिक सफाई
- जैविक परत हटाना
- 3क स्कैनिंग
- संरचनात्मक सुदृढ़ीकरण

कला–क्षरण के कारण –

1. जलवायु परिवर्तन
2. औद्योगिक प्रदूषण
3. अम्लीय वर्षा
4. मानव उपेक्षा
5. अनियंत्रित पर्यटन
6. आधुनिक रसायनों का अनुचित प्रयोग

पारंपरिक संरक्षण विधियाँ – प्राचीन भारत में प्राकृतिक साधनों से संरक्षण किया जाता थाः

- नीम धूप
- चूना लेपन
- प्राकृतिक वार्निश
- शुष्क वातावरण

इन विधियों में पर्यावरण अनुकूलता और स्थानीय ज्ञान का समन्वय था।

आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकें –

1. Deacidification
2. Laser Cleaning
3. Humidity & Temperature Control
4. Digital Archiving
5. 3D Documentation

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 15, April 2026
Impact Factor: 8.2

6. Chemical Consolidation

संस्थागत प्रयास – भारतीय कला संरक्षण में अनेक संस्थाएँ सक्रिय हैंरू

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण – स्मारक संरक्षण
- राष्ट्रीय संग्रहालय – संरक्षण प्रयोगशाला
- INTACH – सामुदायिक परियोजनाएँ
- ललित कला अकादमी – कलाकार प्रोत्साहन

इन संस्थाओं द्वारा संरक्षण प्रशिक्षण, शोध, अभिलेखन एवं परियोजनाएँ संचालित की जाती हैं।

सामाजिक सहभागिता और शिक्षा – संरक्षण केवल सरकारी दायित्व नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व भी है।

- विद्यालयों में विरासत शिक्षा
- विश्वविद्यालयों में Art Conservation पाठ्यक्रम
- स्थानीय समुदाय की भागीदारी
- महिला एवं ग्रामीण कलाकारों का सशक्तिकरण

चुनौतियाँ –

1. विशेषज्ञों की कमी
2. सीमित बजट
3. नीतिगत देरी
4. पारंपरिक ज्ञान का लोप
5. डिजिटल युग में लोककला का घटता आकर्षण

समाधान एवं सुझाव –

1. अंतर्विषयक शोध को प्रोत्साहन
2. राष्ट्रीय संरक्षण नीति
3. डिजिटल आर्काइविंग
4. संरक्षण विशेषज्ञों का प्रशिक्षण
5. निजी–सार्वजनिक साझेदारी
6. सामुदायिक आधारित संरक्षण मॉडल

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-33879

अध्ययन का विश्लेषणात्मक निष्कर्ष – भारतीय पारंपरिक कला का संरक्षण बहुआयामी दृष्टिकोण की मांग करता है। केवल रासायनिक या तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं हैंय इसके लिए सांस्कृतिक संवेदनशीलता, सामाजिक सहभागिता और नीतिगत समर्थन आवश्यक है।

यदि संरक्षण प्रक्रिया में स्थानीय कलाकारों, वैज्ञानिकों, इतिहासकारों और नीति–निर्माताओं का समन्वय स्थापित किया जाए, तो भारतीय कला विरासत को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

निष्कर्ष –

भारतीय पारंपरिक कला हमारी सांस्कृतिक पहचान की आत्मा है। संरक्षण और पुनर्स्थापन केवल अतीत को बचाने का प्रयास नहीं, बल्कि भविष्य को सुरक्षित करने का संकल्प है। परंपरा और आधुनिक विज्ञान के संतुलित समन्वय से ही भारतीय कला विरासत की निरंतरता संभव है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, कमलेश. 'भारतीय चित्रकला का इतिहास'. नई दिल्लीरू राजपाल एंड संस, 2012.
2. मिश्र, आर.एन. 'भारतीय कला और संस्कृति'. वाराणसीरू भारत भारती, 2015.
3. Brown, Percy. Indian Paintings. Oxford University Press, 1982.
4. INTACH Reports on Indian Wall Paintings Conservation, 2018.
5. ASI Annual Conservation Report, 2021.
6. Gupta, S.P. Preservation of Cultural Heritage in India. Aryan Books, 2017.
7. National Museum of India. Conservation Manual. 2019.
8. Verma, S. Traditional Art Forms of India and Their Revival. Rawat Publications, 2020.